RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में नारी विमर्श का समीक्षात्मक अध्ययन

सुनीता देवी

शोधार्थी श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में पिछले पचास वर्षों में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। अनेक नये आन्दोलन नई धुरी के रूप में साहित्य की दुनिया में सम्मिलित हुए। स्त्रियों की आन्तरिक और बाहरी दुनिया में पिछले पचास वर्षों में जबरदस्त बदलाव आये हैं। किसी भी देश एवं समाज में स्त्री प्रायः दूसरे दर्जे की नागरिक मानी जाती है। वर्गों, धर्मों, वर्णों, जातियों उपजातियों में बंटे भारतीय समाज में स्त्री–जाति कभी देह, कभी वस्तु, कभी दासी के रूप में चिन्हित की गई है। उसकी मानसिक, शारीरिक सभी क्षमताओं का पुरुष वर्ग द्वारा शोषण किया गया। पितृ–प्रधान भारतीय संस्कृति में वह पुरुष वर्ग की भोग्या बनी रही। समाज के सारे नियम पुरुषों द्वारा अपने ही हित साधन में ही गढ़े गये हैं। स्त्रियों के उत्पीड़न का इतिहास उतना ही पुराना है जितना सामाजिक संरचना के उद्‌भव और विकास का इतिहास। प्राचीन साहित्य में ढेरों कथाएं मौजूद हैं जो पुरुष–स्वामित्व की सामाजिक स्थिति के विरुद्ध स्त्रियों के प्रतिरोध और विद्रोह को प्रस्तुत करती हैं। स्त्रियों की दासता और उनकी समाज में स्थिति का कई स्त्री–विचारकों ने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक तर्कपूर्ण प्रतिवाद किया है। इसके प्रमाण भारत और पूरी दुनिया के इतिहास और साहित्य में मिलते हैं। स्त्री–मुक्ति विमर्श के प्रश्न पर चिन्तन और विचारों के संघर्ष की शुरुआत दो शताब्दी से कुछ समय पहले अमेरिका और यूरोप में हुई थी। तब से लेकर अब तक विश्व के सभी देशों में स्त्री–आन्दोलनों, स्त्री–पुरुष समानता एवं स्त्री–अधिकारों के विविध पक्षों का और स्त्री–प्रश्न पर चिन्तन का लम्बा–चौड़ा इतिहास हमारे सामने फैला पड़ा है।

स्त्री–प्रश्न पर केन्द्रित है 'विमर्श श्रृंखला'। स्त्री–विमर्श पर न केवल पुरुष विचारकों ने बल्कि स्त्री विचारकों ने भी अपना सक्रिय योगदान दिया है स्त्री–विमर्श में न केवल स्त्री–संबंधित नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये बल्कि स्त्री–जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर ज्ञान, कर्म और यथार्थ का लंबा लेखा–जोखा भी प्रस्तुत किया। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में नर–नारी का समान योगदान है। समाज में पुरुष तथा स्त्री के कार्यक्षेत्र पृथक–पृथक हैं, परन्तु समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, परन्तु यदि महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करते हुए भी स्त्री को पुरुष की दासता तथा पद–पद पर अपमान मिलेगा तो उसका विरोध करना स्वाभाविक है। लोग दलीलें देते हैं कि हमारा समाज आधुनिक हो रहा है। इक्कीसवीं सदी महिलाओं की सदी होगी। किंतु ऑकड़े बताते हैं कि समाज की आधी आबादी महिला की स्थिति एकदम असंतोषजनक हैं– शिक्षा का क्षेत्र हो या सेवाओं का, घर–परिवार का क्षेत्र हो या राजनीति का, हर कहीं उसकी स्थिति दोयम दर्जे की बनी हुई है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट मे लिखा है कि दुनिया की 98 प्रतिशत पूंजी पर पुरुषों का कब्जा है। पुरुषों के बराबर आर्थिक और राजनीतिक सत्ता पाने में औरतों को अभी हजार वर्ष और लगेंगे।

सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री–चेतना ने ही 'स्त्री–विमर्श' को जन्म दिया है। ''स्त्री–विमर्श आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकारी की पहल का दूसरा नाम है। स्त्री–विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद की संकल्पना है फिर भी बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में इस विचारधारा को पनपने के लिए उपयुक्त परिवेश मिला।''

स्त्री को अपने अस्तित्व के बोध ने विमर्श की प्रेरणा दी। आत्मसमर्पण और पुरुष की एकाधिकारशाही के माहौल से स्त्री को बाहर लाने का श्रेय स्त्री–विमर्श को ही देना होगा। स्त्री–विमर्श और कुछ नहीं अपनी अस्मिता की पहचान, स्व की चिंता, अस्तित्व बोध और अधिकार को जतलाने और बतलाने का विचार चिंतन है।

यह सदियों से स्थापित पुरुष मानसिकता का तर्पण है, भावुक स्त्री का समर्पण नहीं। जहाँ 'मैं' की चिंता का एहसास है, समझना चाहिए कि वहाँ से स्त्री–विमर्श की शुरूआत है। जब भावना की अपेक्षा बुद्धि की कसौटी पर, विषमता की अपेक्षा समता की कसौटी पर, परम्परा की अपेक्षा आधुनिकता की कसौटी पर, संस्कृति की अपेक्षा कार्यशक्ति की कसौटी और लिंगात्मक की अपेक्षा गुणात्मक कसौटी पर व्यक्ति के मूल्यांकन का सूत्रपात होगा, तभी स्त्री–विमर्श के चिंतन के लिए बल मिलेगा। स्त्री–विमर्श ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता, खामोशी को तोड़ा है तथा अपनी चुप्पी को गहरे मानवीय अर्थ दिए हैं। हाशियों की दुनिया को तोड़ा है। यही स्त्री–विमर्श की भूमिका है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्त्री विमर्श के संदर्भ में विद्वानों के विचार– स्त्री विमर्श को लेकर उसकी माँगों, उसके स्वरूप आदि को निर्धारित करने, उसे व्याख्यायित करने का प्रयास अनेक विद्वानों, आलोचकों ने किया। सीमोन द बोउवार स्त्री स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए कहती हैं– ''अब तक स्त्री की संभावनाओं का दमन किया जाता रहा। स्त्री को अब स्वयं इसके हित और मानवता के भी हित में स्वतंत्रता मिलनी ही चाहिए।'' स्त्री की स्वतंत्रता को उन्होंने स्त्री व मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण माना। वर्जीनिया वुल्फ स्त्री की सामर्थ्य का परिचय देती हुई लिखती हैं– ''मुझे किसी पुरूष से घृणा करने की जरूरत नहीं है, वह मुझे चोट नहीं पहुंचा सकता। मुझे किसी पुरूष की खुशामद करने की जरूरत नहीं है; उसके पास मुझे देने को कुछ भी नहीं है। इस तरह अब मुझे ही, मानव जाति के दूसरे आधे हिस्से के प्रति मेरा रूख बदलने लगा।''

जॉन स्टुअर्ट मिल स्त्री स्वतंत्रता व समानता का समर्थन करते हैं तथा उसके बेहतर भविष्य की अपेक्षा रखते हैं– ''स्त्रियों को पुरूषों के समान शिक्षा और प्रोत्साहन के अवसर तो चाहिए ही, पर पुरानी बाधाओं का टूटना और समानता के नए मूल्यों का आगमन भी अपने–आपमें एक बहुत बड़ी शिक्षा और एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन, साबित होगा। स्त्री एक पूर्ण मनुष्य की तरह महसूस कर सकेगी .....उसके व्यक्तित्व में हमें एक नया और सुखद बदलाव देखने को मिलेगा।''

महादेवी वर्मा स्त्री अधिकारों की बात करते हुए लिखती हैं– ''हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय; न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी पर प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन नहीं सकेंगी।'' वह स्त्री के लिए स्वत्व की भावना को महत्वपूर्ण मानती हैं।

राजेन्द्र यादव का मानना है कि स्त्री पुरूष में लिंगभेद नहीं किया जाना चाहिए। वह लिखते हैं– ''लिंगभेद मर्द समाज ने दिया है, शारीरिक भेद प्राकृतिक है। प्राकृतिक भेद बना रह सकता है लेकिन सामाजिक भेद 'ठीक' होना चाहिए। यही स्त्री विमर्श का नया योगदान है।''

मृणाल पाण्डे का मानना है कि स्त्री को भी पुरूष के समान मनुष्य माना जाना चाहिए। वह कहती है– ''स्त्री के अस्तित्व को इसके पुरूष से जुड़े संबंधों तक ही सीमित करके न देखा जाए बल्कि पुरूष की ही तरह उसे भी मानवता का एक भिन्न तथा अनिवार्य और पूरक तत्व माना जाए।''

ममता कालिया स्त्री विमर्श का तात्पर्य मुख्यधारा में शामिल होने को मानती हैं। वह लिखती हैं– ''मुख्यधारा में शामिल हुए बिना केवल निजी समस्याओं का अरण्य रोदन स्त्री विमर्श का लक्ष्य नहीं है।''

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री विमर्श को स्त्री–पुरूष की समानता के संदर्भ में परिभाषित करती हैं– ''स्त्री विमर्श वह बातचीत है, तर्क वितर्को से भरी बहस और बहसों से निकलकर आने वाला वह निष्कर्ष है, जो स्त्री के जीवन को पुरूष जीवन के साथ समानता के स्तर पर लाना चाहता है।''

स्त्री विमर्श के मुद्दे– स्त्री विमर्श से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व साहित्यिक क्षेत्र के चिंतकों, दार्शनिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, लेखकों ने स्त्री की स्थिति, उसके जीवन, उसकी समस्याओं का गहन, सूक्ष्म अवलोकन करते हुए जिन अधिकारों की माँग की है, जिस स्वरूप को निर्धारित किया है। उन्हें मोटे तौर पर इस प्रकार समझा जा सकता है–

- आदिम काल से धर्म, संस्कृति व सत्ता ने अपने स्वार्थपूर्ति के लिए पुरूष को भोक्ता व स्त्री को भोग्या बनाए रखा मगर अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। स्त्री इसका पुरजोर विरोध कर रही हैं।
- स्त्री सदैव हीनता व दासत्व की बेड़ियों में जकड़ी रही इसलिए उसका भी कोई अस्तित्व है उसकी भी कोई पहचान हो सकती है इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ थी परंतु आज वह अपनी अस्मिता को लेकर सजग है।
- परंपरा कहीं न कहीं रूढ़ियों को प्रश्रय देती है जिसका सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव स्त्री जीवन पर पड़ा। आज रूढ़ियाँ खत्म हो रही हैं उसकी जगह नवीन जीवन दृष्टि विकसित हो रही है जिसका लक्ष्य सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना है।
- सभी स्त्रीवादी विमर्शकार आर्थिक आत्मनिर्भरता को मुक्ति की अनिवार्यता के रूप में स्वीकार कर रहे हैं।
- स्त्री को सदैव दोयम दर्जे पर रखा गया। आज माँग की जा रही है कि स्त्री और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं। अतः दोनों की स्थिति भी समान होनी चाहिए।
- स्त्री को कभी चुनाव की, निर्णय की स्वतंत्रता नहीं दी गई वह दूसरे के निर्णय को ढोती रही। आज अपेक्षा की जा रही है कि उसे यह अधिकार मिले, उसमें इतनी क्षमता विकसित हो कि वह अपनी मुक्ति का मार्ग तलाश सके।
- आज स्त्री की समाज के विविध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका की अपेक्षा की जा रही है। जिससे वह सामाजिक व राष्ट्रीय विकास में पूर्ण भागेदारी निभा सकें।
- स्त्री को अपना जीवन अपने तरीके से जीने का पूरा अधिकार है इसलिए सत्ता व व्यवस्था को अवरोध का कार्य नहीं करना चाहिए।
- पैतृक संपत्ति में अधिकार की माँग भी की गई और मानी भी जा रही है।
- घरेलू कार्यो के लिए वेतन, कुछ संस्थाओं ने इस माँग को भी रखा ताकि पितृसत्ता व पुरूष स्त्री द्वारा किए गए कार्यों उसकी जिम्मेदारियों का महत्व समझे उसका सही आकलन करें।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- स्त्री को दासता की बेड़ियों में जकड़े रहने की आकांक्षा ने उसे शिक्षा से दूर रखा। मगर अब ऐसा संभव नहीं है। आज अधिकांशतः स्त्रियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है तथा जो आज भी शिक्षा से दूर हैं उसके लिए यह प्रयास किया जा रहा है।
- यौन जीवन स्त्री का हो या पुरूष का उसे चुनाव का अधिकार मिलना चाहिए। यौन मुक्ति की बात भी स्त्री विमर्श का मुद्दा है।
- स्त्री को अपनी भाषा निर्मित करनी चाहिए ताकि वह पितृसत्ता का उसकी संकीर्ण मानसिकता का विरोध कर सके।
- समान वेतन व मानव अधिकारों की मांग की जा रही है।
- बाजार, मीडिया व समाज की स्त्री विरोधी मानसिकता का पुरजोर विरोध जो स्त्री की आदर्श छवि का निर्माण कर रहा है साथ ही उसका वस्तुकरण भी कर रहा है।
- स्त्री के अनुभव को महत्व दिया जा रहा है क्योंकि वह जीवंत व प्रमाणिक है।
- स्त्री अंतर्विरोध का नकार, क्योंकि वह सामूहिकता का विरोध करता है।
- घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, लैंगिक भेदभाव, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह का तीव्र विरोध जो स्त्री को हीन स्थिति में बनाए रखता है।
- ग्रामीण, गरीब, अल्पसंख्यक, अश्वेत व यौनकर्मी की स्थिति में सुधार व अधिकार की बात करता है।
- स्त्री के प्रति बढ़ते अपराध, हिंसा का विरोध।
- समाज के विविध क्षेत्रों में आरक्षण की मांग भी की जा रही है।
- प्रजनन संबंधी अधिकार, मातृत्व अवकाश व गर्भपात का अधिकार आदि सम्मिलित हैं।

स्त्री विमर्श स्त्री के वस्तु से व्यक्ति बनने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है। संस्कृति व सत्ता के अंतर्विरोध को प्रकट करता है। वह उसकी मुक्ति की संभावनाएं तलाशता है ताकि समाज की आधी आबादी विविध क्षेत्रों में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सके, अपने स्व का विस्तार कर सके। यह किसी भी राष्ट्र व समाज के लिए हितकारी होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–1, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
2. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–2, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
3. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–3, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
4. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–4, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
5. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–5, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
6. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण : 2007, दूसरी आवृत्ति : 2010
7. रेणु फणीश्वरनाथ, परती : परिकथा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण : 2009, पहली आवृत्ति : 2010
8. रेणु फणीश्वरनाथ, ठुमरी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण : 2009, पहली आवृत्ति : 2011
9. रेणु फणीश्वरनाथ, अगिनखोर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2008, पहली आवृत्ति : 2010
10. रेणु फणीश्वरनाथ, अच्छे आदमी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2009, सातवीं आवृत्ति : 2001
11. रेणु फणीश्वरनाथ, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली चौथा संस्करण : 1990, नौवीं आवृत्ति : 2013
12. रेणु फणीश्वरनाथ, ऋणजल धनजल, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2005, तीसरी आवृत्ति : 2013
13. यायावर भारत सम्पादक, समय की शिला पर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1991, दूसरी आवृत्ति : 2012

RRIJM 2015, All Rights Reserved